का काव्य पंडितों द्वारा बंधकर निश्चेष्ट और संकुचित होगा तब-तब उसे सजीव और चेतन प्रसार देश के सामान्य जनता के बीच स्वच्छंद बहती हुई प्राकृतिक भाव धारा से जीवन तत्व ग्रहण करने से ही प्राप्त होगा। राजाओं की सभाओं में साहित्य के महापंडित हो सकते हैं और उनके गुणगान करते गीत भी लेकिन जानसाधारण ने जो रचा वो भावना झोपड़ियों में गुंजाते-गूंजते छंद तोड़कर ऐसी उमड़ी जिससे सातों लोकों का तो पता नहीं पर लोकजीवन अपने अभाव में भी भाव से भर उठा। भाव की झंकार में एक उमड़ती हुई पुकार है, एक आक्रोश है और ललकारती हुई चुनौती है, तो करुण कतार भावना है तो प्रेम भी है।

संगीतमयी प्रकृति जब गुनगुना उठती है लोकगीतों का स्फुरण हो उठना स्वाभाविक ही है। विभिन्न ऋतुओं के सहजतम प्रभाव से अनुप्राणित ये लोकगीत प्रकृति रस में लीन हो उठते हैं। बारह मासा, छैमासा तथा चौमासा गीत इस सत्यता को रेखांकित करने वाले सिद्ध होते हैं। पावसी संवेदनाओं ने तो इन गीतों में जादुई प्रभाव भर दिया है। पावस ऋतु में गाए जाने वाले कजरी, झूला, हिंडोला, आल्हा आदि इसके प्रमाण हैं।

सामाजिकता को जिंदा रखने के लिए लोकगीतों/लोक संस्कृतियों का सहेजा जाना बहुत जरूरी है। कहा जाता है कि जिस समाज में लोकगीत नहीं होते, वहां पागलों की संख्या अधिक होती है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था कि लोकगीतों में धरती गाती है, पर्वत गाते हैं, नदियां गाती हैं, फसलें गाती हैं। उत्सव, मेले और अन्य अवसरों पर मधुर कंठों में लोक समूह लोकगीत गाते हैं।

सदियों से दबे-कुचले समाज ने, खास कर महिलाओं ने सामाजिक दंश, अपमान, घर-परिवार के तानों, जीवन संघर्षों से जुड़ी आपा-धापी को अभिव्यक्ति देने के लिए लोकगीतों का सहारा लिया और बना लिए अपने दर्द से रूह के रिश्ते और इस तरह जाते हुए सूरज को आंख भिगोकर उन्होंने भले ही देखा हो या उगते चांद से मुस्कराकर नरे भले ही मिलाई हो दोनों ही स्थति में जो उनके साथ था वह था उनका गीत वो गीत जिन्हें आपने, हमने नाम दिया लोकगीत।

कला को खूबसूरत होना चाहिए मगर उससे भी पहले कला को सच्चा होना चाहिए । हर गीत एक दर्द भरी निजी प्रक्रिया से गुजरकर अपने निजी सत्य को जानता है इसलिए ही शायद लोकगीत सदियों से जनमानस में अपनी पैठ बनाए हुए हैं।

लोकगीत अनगढ़ भले ही हो पर लिजलिजी भावनाओं की भयंकर बाढ़ में ये बाकायदा कश्ती बन जनमानस को उनके गंतव्य तक पहुंचा ही देता है। मूसलाधार बारिस में भीगते हुए या तपते हुए सूर्य की किरणों को सहते हुए किसी अज्ञात कंठ से फूटते हुए उस काल को नमन जिसने हमें जीवन के उल्लास सुरों में ढाल कर दिया। अज्ञात रचयिताओं तुम्हें नमन तुमने अपने हरेपन को बचा कर रखा ताकि हमारे रास्तों में रस बना रहे।

'स्वर सरिता' आपको नियमित भेजी जाती रही है, अब इसे निरन्तर संचालित करते रहने के लिए कृपया स्वयं प्रेरणा से सदस्यता शुल्क भिजवा कर सहयोग करें।

एक वर्ष का सदस्यता शुल्क : ₹600
छह वर्ष का सदस्यता शुल्क : ₹3000

चैक/डी.डी. -'वीणा प्रकाशन', जयपुर (VEENA PRAKASHAN, JAIPUR) के नाम निम्न पते पर भेजें या

बैंक ऑफ बड़ौदा, जौहरी बाजार, जयपुर के अकाउंट नं. 01150200000933 में वीणा प्रकाशन के खाते में जमा करवाएं।

बैंक की रसीद के साथ अपना पूरा पोस्टल एड्रेस, पिनकोड एवं फोन नम्बर हमें मेल करें।

वीणा प्रकाशन
हल्दिया हाउस, जौहरी बाजार,
जयपुर-302003
फोन - 0141-2572666,
4022623

Email :
veenaprakashan@gmail.com
website :
veenaswarsarita.com